International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण का स्वरुप एवं विकास का विश्लेषण

डॉ. सुरेन्द्र कुमार चंदेल
सहायक आचार्य- भूगोल,
राजकीय महाविद्यालय, टोंक (राज.)

सारांश

भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण और स्त्री-पुरुष अनुपात का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत पत्र में किया गया है । इस पत्र में भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण के वर्तमान स्वरूप और स्त्री-पुरुष अनुपात की स्थिति को स्पष्ट किया गया है भीलवाड़ा राजस्थान का एक महत्वपूर्ण जिला है । सभ्यता के इतिहास के प्रत्येक युग में नगर सभ्यता एवं संस्कृति के केन्द्र स्थल रहे है ।जिनका मानव के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है |नगरीकरण आर्थिक,सामाजिक प्रगति का सूचक माना जाता है, एवं स्त्री-पुरुष अनुपात का संतुलन एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहलू है । अध्ययन क्षेत्र में नगरीकरण की दर 2001.11 दशक में 23.58 प्रतिशत रही, जो राजस्थान के औसत 29.09 प्रतिशत से कम रही। तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 21.23 प्रतिशत है जबकि राजस्थान में यह कुल जनसंख्या का 33.75 प्रतिशत नगरीकृत है | भीलवाड़ा जिले का स्त्री-पुरुष अनुपात 973 है । जबकि राज्य का औसत 928 महिलाए प्रति 1000 पुरूष का है स्त्री - पुरूष अनुपात में अध्ययन क्षेत्र राज्य से आगे है जिले में तहसील स्तर पर नगरीकरण, स्त्री-पुरुष अनुपात दोनो कारको का सूक्ष्म स्तर पर कारण, एवं समस्याओं का अध्ययन किया गया है ।

मुख्य शब्द: *भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण, स्त्री-पुरुष अनुपात, नगरीय जनसंख्या*

प्रस्तावना

भीलवाडा दक्षिण राजस्थान का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। इमारती पत्थर, अभ्रक एवं सूती वस्त्र उद्योग की बहुलता ने इस नगर को विशेष महत्ता प्रदान की है । यह जिला मुख्यालय एवं जिले का प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र है। सन् 1881 में रेलवे के आगमन से पूर्व यह राजपूताना का वाणिज्यिक केन्द्र था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात विस्थापितों के आगमन के साथ-साथ अनेक औद्योगिक इकाईयों की स्थापना से आकर्षित प्रवासियों के आगमन के अलावा प्रशासनिक कार्यालयों तथा संस्थाओं की स्थापना से इस नगर का तीव्र विकास हुआ है। मुख्यतः गत 6 दशकों में इसकी विशेष वृद्धि दृष्टिगोचर होती है । सन् 1941 में इस नगर की जनसंख्या 15,169 थी जो सन् 2001 में बढ़कर 2,80, 128 हो गई अर्थात इन साठ वर्षो में जनसंख्या 18 गुणा बढ गयी ।

इस तीव्र विकास के साथ ही विभिन्न नगरीय समस्याओं ने जन्म ले लिया । इनमें बढ़ती जनसंख्या के लिये अपर्याप्त आवासन सुविधा उत्तरोतर बढ़ता यातायात, अनियोजित तथा अपर्याप्त वाणिज्यिक सेवाएं बिखरी हुई तथा अनियन्त्रित औद्योगिक इकाइयों की स्थापना एवं उनसे उत्पन्न प्रदूषण आदि नगर की मुख्य समस्याएं

हैं। जनता को स्वस्थ जीवनयापन करने हेतु बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त मूलभूत तथा अन्य नगरीय सुविधाएं उपलब्ध कराना अति आवश्यक है। नगर सुधार न्यास भीलवाड़ा द्वारा विभिन्न आवासीय योजनाएं यथा आजाद नगर, पंचवटी, बापू नगर, व्यास कॉलोनी, विजय सिंह पथिक कॉलोनी, प्रताप नगर, अम्बेडकर नगर, सुखाडिया नगर आदि विकसित की गई हैं। उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षण हेतु महाविद्यालय स्थापित किये गये हैं, फिर भी मूलभूत सुविधाओं की काफी कमी है। शहर में पार्को व खुले स्थानों की कमी है। नियोजित ढंग से सुव्यवस्थित परिसंचरण व पार्किंग व्यवस्था का अभाव है तथा शहर में जनउपयोगी सुविधाओं की काफी कमी है। यहाँ के नागरिकों को स्वस्थ जीवन प्रदान करने हेतु बढ़ती हुई जनसंख्या को पर्याप्त मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना आवश्यक है।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए नगर का यह मास्टर प्लान तैयार किया गया है। राजस्थान नगर सुधार अधिनियम, 1959 की धारा 3 की उपधारा (1) के अनुसरण में राज्य सरकार द्वारा दिनांक 31 मार्च 2005 को भीलवाड़ा नगर सहित 38 राजस्व ग्रामों को सम्मिलित करते हुए भीलवाड़ा के अधिसूचित नगरीय क्षेत्र का मास्टर प्लान तैयार करने हेतु मुख्य नगर नियोजक राजस्थान, जयपुर को अधिकृत किया गया। अधिसूचित राजस्व ग्रामों के उपविभाजन आदि कारणों के फलस्वरूप राज्य सरकार द्वारा पूर्व में जारी अधिसूचना में संशोधन कर दिनांक 15.03.2010 को नवीन अधिसूचना जारी की गई, जिसके अनुसार भीलवाडा नगरीय क्षेत्र में भीलवाडा सहित 49 राजस्व ग्राम शामिल किये गये हैं। पूर्व में जारी अधिसूचना में संशोधन कर दिनांक 31.05.2013 को नवीन अधिसूचना जारी की गई, जिसके अनुसार भीलवाडा नगरीय क्षेत्र में भीलवाडा सहित 53 राजस्व ग्राम शामिल किये गये हैं। नगर नियोजन विभाग ने इस क्षेत्र का भौतिक एवं सिविक सर्वे किया तथा विभिन्न विभागों / संस्थाओं एवं अन्य स्त्रोतों से आवश्यक सूचनाओं के संकलन का कार्य किया ।

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भीलवाड़ा शहर की जनसंख्या 2,80,128 थी जो कि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 360009 हो गई। मास्टर प्लान के क्षितिज वर्ष 2035 में जनसंख्या 7.80 लाख हो जाने का अनुमान है। इस जनसंख्या के लिये आधारभूत सुविधाओं को ध्यान में रखते हुये भू-उपयोग प्रस्ताव दिये गये एवं मास्टर प्लान का प्रारूप तैयार किया गया।

भीलवाड़ा की भौगोलिक स्थिति

भीलवाड़ा राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग में 25°1' से 25°58' उत्तरी अक्षांश एवं 74°1' से 75°28' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। उत्तर में अजमेर जिला, दक्षिण में चित्तौड़गढ़, पूर्व में बूंदी और टोंक एवं पश्चिम में राज समन्द जिला स्थित है। पश्चिम से पूर्व तक जिले की कुल लम्बाई 144 किलोमीटर है, जबकि उत्तर से दक्षिण तक इसकी चौड़ाई 104 किमी. है तथा कुल क्षेत्रफल 10455 वर्ग किलोमीटर है, जो राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 3.05 प्रतिशत है। पश्चिमी भाग को छोड़कर सामान्यतः जिला आयता कार है। पूर्वी भाग के मुकाबले में पश्चिमी भाग अधिक चौड़ा है । '

आकृति–1 : भीलवाड़ा जिला–स्थिति मानचित्र

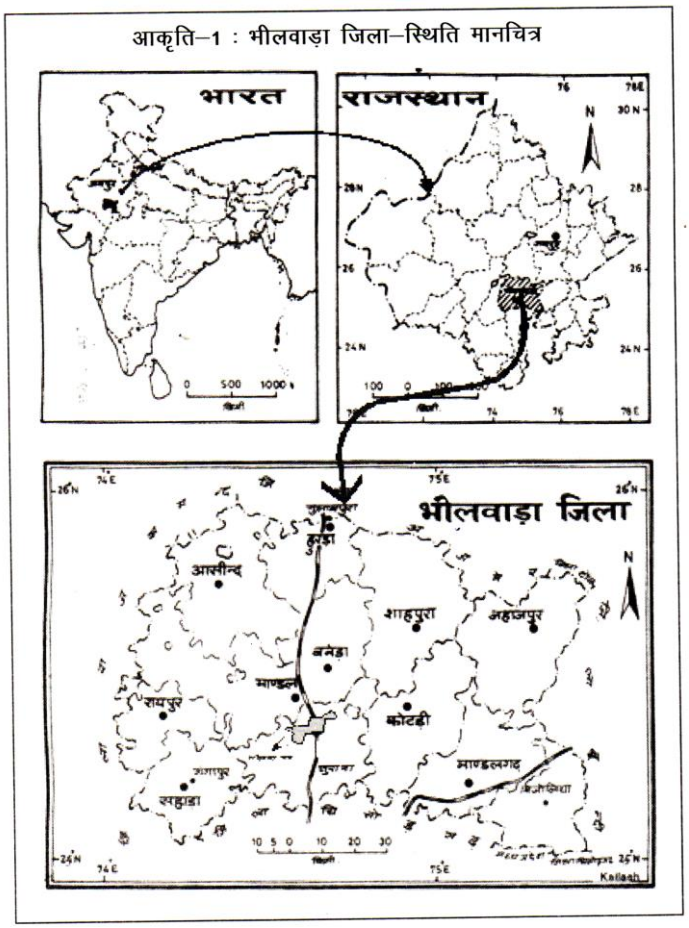

प्रशासनिक दृष्टि से भीलवाड़ा जिलें में आठ 8 उपखण्ड 12 तहसील, 11 पंचायत समिति 381 ग्राम पंचायते एवं 1693 आबाद राजस्व गाँव है अध्ययन क्षेत्र में 7 नगर पालिकाएँ तथा 8 कस्बे है। जो क्रमशः – भीलवाड़ा, गंगापुर, गुलाबपुरा, आसीन्द, जहाजपुर, माण्डलगढ़, बिजौलिया, शाहपुरा है। तालिका संख्या 1.1 में जिले की प्रशासकीय इकाईयों को दर्शाया गया है।

परम्परागत कथन के अनुसार प्राचीन समय में यहाँ अधिकांश निवासी भील थे। जिनके कारण यह स्थान भीलवाड़ा के नाम से जाना जाने लगा। नाम के विपरित इस क्षेत्र में बहुत कम भील रहते है। ऐसा भी कहा जाता है, कि वर्तमान भीलवाड़ा नगर में एक टकसाल थी, जहाँ पर भीलड़ी नाम के सिक्के ढ़ाले जाते थे इसलिए इस जिले का नाम भीलवाड़ा हो गया।

उददेश्य :-

1. भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करना ।
2. भीलवाड़ा जिले में स्त्री - पुरूष अनुपात के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करना ।
3. नगरीकरण की समस्याओ का अध्ययन करना ।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं **द्वितीयक** आकड़ो का प्रयोग किया गया है प्राथमिक आकड़ो का संग्रह व्यक्गित सम्पर्क, प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्यम से किया गया है, **द्वितीयक** आकड़ो का संकलन गैजेटियर, सांख्यिकीय रूपरेखा, सांख्यिकी विभाग नियोजन विभाग एवं पुस्तको के माध्यमो से किया है । इस अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक है ।

भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण की स्थिति

अध्ययन क्षेत्र में आठ नगरीय कस्बे, भीलवाड़ा, गंगापुर, गुलाबपुरा, सहाड़ा, आसीन्द, जहाजपुर, माण्डलगढ़, बिजौलिया, शाहपुरा है ।गत दशक में नगरीय जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है यदि राज्य की नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर से तुलना की जाये तो गत दशक में भीलवाड़ा जिले में राज्यकी अपेक्षा वृद्धि दर अधिक रही है सन् 2011 में राज्य में नगरीकरण की दर 29.09 प्रतिशत है जबकि जिले में यह दर 23.58 प्रतिशत रही है।

अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक नगरीकरण सन् 1971 के दशक में हुआ जिसका मुख्य कारण कुछ: बड़े गाँवों को नगर क्षेत्र का दर्जा देने एवं नगरों में जनसंख्या वृद्धि होना है। पिछले सालों में ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों ने गाँवों को छोड़कर शहरों में अपने मकान बना लिये हैं ।

शहरों की तरफ पलायन का मुख्य कारण नगरीय सुविधाओं का उपभोग करना है। इसके अलावा मेहनत–मजदूरी व उद्योगों में काम करने वाले लोग शहर में ही बस जाते हैं। आसीन्द, हुरड़ा, सहाड़ा, जहाजपुर, शाहपुरा, बिजौलिया, माण्डलगढ़ तहसील मुख्यालय तथा भीलवाड़ा जिला मुख्यालय होने से नौकरी पेशा लोग शहर में आकर बस गये है। जिससे क्षेत्र में नगरीकरण को बढ़ावा मिला है।

तालिका संख्या 1 भीलवाड़ा एवं राजस्थान नगरीकरण के तुलनात्मक आकड़े

वर्ष	कुल जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	नगरीय जन. प्रतिशत	नगरीय जन. वृद्धि	घनत्व (प्रतिवर्ग किमी)	लिंगानुपात (प्रति हजार)
1941	622128	39812	6.30	20.6	60	943
1951	728522	67505	9.27	69.6	70	935
1961	865797	63433	9.36	6.8	83	909
1971	1054890	116306	11.02	83.4	101	915
1981	1310379	188563	14.39	62.1	125	948
1991	1593128	311144	19.53	65.0	152	957
2001	2013789	414851	20.60	33.3	193	979
2011	2408523	512654	21.28	23.58	230	973

कुल जनसंख्या के सन्दर्भ में नगरीकरण

भीलावाड़ा जिले में पिछले दशक में नगरीकरण 23.58 प्रतिशत की दर से बढ़ा है। सन् 2011 की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का 21.28 प्रतिशत पाया जाता है। तालिका संख्या 2 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक नगरीय जनसंख्या भीलवाड़ा तहसील में 70 12 प्रतिशत मिलती है। जिसका मुख्य कारण जिला मुख्यालय पर उपलब्ध जन सुविधाएँ, रोजगार तथा ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का शहर की ओर पलायन करना। दूसरे स्थान पर हुरड़ा तहसील में 21.60 प्रतिशत भाग नगरीय जनसंख्या है। शाहपुरा 17.15 प्रतिशत, बिजौलिया

15.85 प्रतिशत, सहाड़ा 15.23 प्रतिशत माण्डलगढ़ 13.68 प्रतिशत, जहाजपुर 10.45 प्रतिशत भाग नगरीय जनसंख्या है।

जिले में सबसे कम नगरीय जनसंख्या आसीन्द तहसील में 6.92 प्रतिशत मिलती है। क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य करती है अतः लोग गाँवों में अधिक निवास करते है माण्डल तहसील को 2001 की जनगणना में ग्रामीण क्षेत्र में शामिल कर दिया है एवं बनेड़ा, रायपुर, कोटड़ी तहसीलों में ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण यहाँ नगरीय जनसंख्या नहीं मिलती है। भीलवाड़ा तथा हुरड़ा तहसील को छोड़कर क्षेत्र में शहरीकरण का प्रतिशत कम पाया जाता है जो कि क्षेत्र का आर्थिक–सामाजिक जीवन स्तर के पिछड़ेपन का द्योतक है। क्योंकि आर्थिक विकास और आमदनी बढ़ने पर शहरीकरण की दर भी बढ़ती है जिसे विकास का मापदण्ड समझा जाता है।

तालिका संख्या 2 भीलवाड़ा जिले में नगरीय जनसंख्या 2011 नगरी जनसंख्या प्रतिशत में

क्र.स.	नाम तहसील	जनसंख्या 2011	पुरुष	महिला	योग
1	आसीन्द	239760	3.52	3.40	6.92
2	हुरड़ा	111428	11.77	9.83	21.60
3	शाहपुरा	207020	8.64	8.51	17.15
4	जहाजपुर	196872	5.35	5.10	10.45
5	माण्डल	233399	-	-	-
6	बेनेडा	123714	-	-	-
7	भीलवाड़ा	359483	36.53	33.62	70.12
8	रायपुर	97869	-	-	-
9	सहाड़ा	116309	7.88	7.35	15.23
10	कोटड़ी	174011	-	-	-
11	माण्डलगढ़	253347	6.98	6.70	13.68
12	बिजौलिया	98640	8.20	7.65	15.85
	भीलवाड़ा जिला	2408523	11.01	10.26	21.28

कुल जनसंख्या के सन्दर्भ में पुरूष जनसंख्या नगरीकरण

अध्ययन क्षेत्र की पुरुष जनसंख्या शहरीकरण को तालिका संख्या 2 में दर्शाया गया है सन् 2011 की जनगणना के अनुसार शहरी पुरूषों का सबसे अधिक भाग भीलवाड़ा तहसील एंव जिला मुख्यालय पर 36.53 प्रतिशत पाया जाता है। जिसका प्रमुख कारण रोजगार, उद्योग धन्धों के स्थापित होना, सरकारी कार्यालयों एवं जनसुविधाओं के कारण लोग शहरों में बस गये है। दूसरा हुरड़ा तहसील 11.77 प्रतिशत, शाहपुरा 8.64 प्रतिशत, बिजौलिया 8.20 प्रतिशत, सहाड़ा 7.88 प्रतिशत माण्डलगढ़ 6.98 प्रतिशत, जहाजपुर 5.35 प्रतिशत पुरूष जनसंख्या शहरों में निवास करती है। सबसे कम पुरूष शहरीकरण 3.52 प्रतिशत आसीन्द में पाया जाता है। जो कि आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़ेपन का द्योतक है। इस तहसील में उद्योगों का अभाव है, तथा अधिकांश लोग कृषि कार्य करते है इसलिए में गाँवों में ही निवास करते हैं।

कुल जनसंख्या के सन्दर्भ में महिला जनसंख्या नगरीकरण

अध्ययन क्षेत्र की महिला जनसंख्या शहरीकरण को तालिका संख्या 2 में दर्शाया गया है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जिले में 10.26 प्रतिशत महिलायें शहरी क्षेत्र में निवास करती है। सबसे अधिक महिला जनसंख्या शहरीकरण 33.62 प्रतिशत भीलवाड़ा तहसील में पाया जाता है। क्योंकि जिला मुख्यालय पर जनसुविधाओं एवं रोजगार उपलब्धता इसका कारण है! तथा दूसरा स्थान हुरड़ा तहसील 9.83 प्रतिशत, शाहपुरा 8.51 प्रतिशत, बिजौलिया 7.65 प्रतिशत, सहाड़ा 7.35 प्रतिशत माण्डलगढ़ 6. 70 प्रतिशत, जहाजपुर 5.10 प्रतिशत महिला शहरीकरण मिलता है । पुरूषों की भाँति सबसे कम महिला जनसंख्या शहरीकरण आसीन्द में 3.40 प्रतिशत पाया जाता है।

नगरीकरण/शहरीकरण के दोष

नगरीय जनसंख्या में प्रायः प्राकृतिक वृद्धि की अपेक्षा नगरोन्मुख ग्रामीण प्रवास से अधिक वृद्धि हो जाती है। नये नागरों की स्थापना तथा ग्रामों के नगरों के रूप में कायान्तरण से भी नगरीय जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। किन्तु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नागरिक सुविधाओं आवास, रोजगार, विद्युत एवं जल आपूर्ति परिवहन सफाई स्वास्थ्य एवं अन्य जनोपयोगी सुविधाओं में बढोतरी नहीं हो पायी है जिसके कारण नगरवासियों के सामान्य जीवन स्तर में गिरावट आयी है। बढ़ते शहरीकरण से निम्नांकित समस्याएँ उत्पन्न हो रही है।

स्थान की समस्या

नागरों में स्थापित होने वाले नये-नये उद्योग-धंधो, स्टोरो, दुकानों, कार्यालय, पार्कों, आवास गृहों आदि के लिए अधिकाधिक भूमि की आवश्यकता पड़ती है जिसकी पूर्ति के लिए नगर की बाहय सीमा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों की ओर होता है इस प्रकार सारी कृषि योग्य भूमि निर्मित क्षेत्र के रूप में परिवर्तित हो जाती है नागरों में जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न स्थानाभाव के कारण भूमि का मूल्य अत्यधिक बढ़ गया है। इससे शहरों में दुकान, कार्यालय तथा अन्य सामाजिक कार्यों के लिए भूमि प्राप्त करना कठिन हो गया है।

आवास की समस्या

नगरों में प्रतिवर्ष बढ़ी संख्या में लोग ग्रामीण क्षेत्रों से आकार रहने लगते है जिससे शहरों की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है किन्तु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नगरों में आवासों की संख्या नाही बढ़ पाती है जिससे आवासों की समस्या आती है अल्पआय अथवा बेरोजगारी के कारण प्रायः शहरों में हजारों लाखों लोग गंदी बस्तियों तथा झुग्गी–झोपड़ियों और फुटपाथों पर सोने के लिए विवश होते है।

परिवहन की समस्या

नगरीय विस्तार तथा बढ़ते नागरीकरण ने परिवहन सम्बंधी जटिल समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। अधिकांश नगरों के आंतरिक भागों में सड़कों के कम चौड़े होने तथा वाहनों की अधिकता से इतनी अधिक भीड़ जमा हो जाती है कि कभी–कभी घण्टों यातायात अवरूद्ध हो जाता है। नगरों के केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र (C.B.D.) या चीक क्षेत्र में वाहन नही पहुँच पाते हैं और यहाँ पैदल चलना ही एक मात्र उपाय रह जाता है।

जल आपूर्ति की समस्या

नगरों में विशाल जनसंख्या के लिए शुद्ध पेय जल की आपूर्ति कर पाना नगर प्रशासन के लिए एक बढ़ी जिम्मेदारी और चुनौती भरा काम होता है। पेयजल के अलावा उद्योगों के लिए काफी जल की आवश्यकता होती है अनेक बार गंदे जल की आपूर्ति हो जाने पर हैजा पीलिया आदि बीमारियों भंयकर तथा महामारी के रूप में फैल जाती हैं।

विद्युत आपूर्ति की समस्या :–

विद्युत आधुनिक नगरों की प्राण है इसके अभाव में शहर मृत प्रायः हो जाते हैं घरों से उद्योगों तक सभी मशीन उपकरण विद्युत से चलते हैं। शहरों में निरंतर बढ़ती आबादी तथा उद्योगों की बढती संख्या के अनुसार विद्युत की मांग को पूरा करना अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि विद्युत उत्पादन सीमित मात्रा में हो पाता है।

नगरीय अवशिष्ट पदार्थों के विसर्जन की समस्या

शहरों में मल मूत्र, कूडा करकट, रसायनयुक्त जल आदि अवशिष्ट पदार्थों के निकास की बड़ी समस्या पाई जाती है। अधिकांशतः नगरों के गन्दे जल को निकटवर्ती नदियों में गिराया जाता है यह जल पेड़ पौधों के लिए भी हानिकारक होता है और यदि रिसकर भूमिगत जल से मिलता है तो भूमिगत जल भी दूषित हो जाता है खुली सीवरेज गालियों से दुर्गन्ध निकलती रहती है घरों से निकलने वाले कूड़ा करकट को जिन्हे प्रायः सड़कों पर पॉलीथीन में भरकर फेंक दिया जाता है जो नालियों में फसकर सीवरेज को बन्द कर देता है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या

शहरों में पर्यावरण के प्रदूषित होने की समस्या सामान्य है इनमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि प्रमुख है नगरों के सूक्ष्म जलवायविक अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि नगरों के मध्यवर्ती भागों का तापमान अन्य भागों की तुलना में 2 से 3 तक बढ़ जाता है जिसका मुख्य कारण रसोई, यातायात व कारखानों से निकलने वाला धुआँ है पेड़ों तथा वनस्पतियों के अभाव में वायु प्रदूषण कम नहीं हो पाता है. नगरों में जल प्रदूषण की समस्या भी गम्भीर है। नगरों से विसर्जित जल जहाँ तक रिसकर बहता हुआ पहुँचाता है यहाँ का जल

प्रदूषित हो जाता है नगर का गंदा जल जिस नदी, झील तालाब में गिराया जाता है यहाँ का जल विषैला हो जाता है जो मानव उपयोग या किसी जीव के लिए हानिकारक होता है।

नगर प्रायः कोलाहलमय होता है जहाँ रात-दिन शोर होते रहते है तेज लाउडस्पीकरों के बजाने मोटर वाहनों की आवाज, कारखानों की मशीनों के चलने से शोर रेलगाडियों की आवाज आदि नगरों में ध्वनि प्रदूषण को जन्म देती है। नगर में अत्यधिक शोर-शराबे से बहरेपन अनिद्रा, सिरदर्द, मानसिक अशान्ति एवं उच्च रक्तचाप, घबराहट आदि विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती है।

निष्कर्ष

नगरीय जनसंख्या में प्रायः प्राकृतिक वृद्धि की अपेक्षा नगरोन्मुख ग्रामीण प्रवास से अधिक वृद्धि हो जाती है। नये नागरों की स्थापना तथा ग्रामों के नगरों के रूप में कायान्तरण से भी नगरीय जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। किन्तु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नागरिक सुविधाओं आवास, रोजगार, विद्युत एवं जल आपूर्ति परिवहन सफाई स्वास्थ्य एवं अन्य जनोपयोगी सुविधाओं में बढोतरी नहीं हो पायी है जिसके कारण नगरवासियों के सामान्य जीवन स्तर में गिरावट आयी है। बढ़ते शहरीकरण से निम्नांकित समस्याएँ उत्पन्न हो रही है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात विस्थापितों के आगमन के साथ-साथ अनेक औद्योगिक इकाईयों की स्थापना से आकर्षित प्रवासियों के आगमन के अलावा प्रशासनिक कार्यालयों तथा संस्थाओं की स्थापना से इस नगर का तीव्र विकास हुआ है। मुख्यतः गत 6 दशकों में इसकी विशेष वृद्धि दृष्टिगोचर होती है । सन् 1941 में इस नगर की जनसंख्या 15,169 थी जो सन् 2001 में बढ़कर 2,80, 128 हो गई अर्थात इन साठ वर्षो में जनसंख्या 18 गुणा बढ गयी ।

भीलावाड़ा जिले में पिछले दशक में नगरीकरण 23.58 प्रतिशत की दर से बढ़ा है। सन् 2011 की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का 21.28 प्रतिशत पाया जाता है। तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक नगरीय जनसंख्या भीलवाड़ा तहसील में 70 12 प्रतिशत मिलती है। जिसका मुख्य कारण जिला मुख्यालय पर उपलब्ध जन सुविधाएँ, रोजगार तथा ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का शहर की ओर पलायन करना। दूसरे स्थान पर हुरड़ा तहसील में 21.60 प्रतिशत भाग नगरीय जनसंख्या है। शाहपुरा 17.15 प्रतिशत, बिजौलिया 15.85 प्रतिशत, सहाड़ा 15.23 प्रतिशत माण्डलगढ़ 13.68 प्रतिशत, जहाजपुर 10.45 प्रतिशत भाग नगरीय जनसंख्या है।

संदर्भ

1. नन्द किशोर सुगनचन्द कलवर -2014 "समाजिक-आर्थिक भूगोल पोईन्टर पब्लिशर्स एस. एम. एस हाई वे जयपुर पुष्ठ 91
2. दुबे. आई. एन. तथा सिन्हा वी. एस. ; 2010 आर्थिक विकास एवं नियोजन नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली पृष्ठ 54
3. मौर्य एस.डी. "2019" जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ 229
4. डिस्ट्रिक सेन्सस हैण्ड बुक 2016 भीलवाड़ा पृष्ठ 24
5. भल्ला, एल.आर 2017 "राजस्थान का भूगोल" कुलदीप पब्लिकेशन अजमेर
6. बोर्ड ऑफ रेवेन्यू राजस्थान अजमेर : लाइव स्टॉक सेन्सस 2015

7. सहकारी विभाग राजस्थान जयपुर प्रगति विवरण 2016-17
8. प्रसाद रामा, शर्मा अनिता " 2020" लेवल ऑफ सोसियो – इकानॉमिक डेवलपमेंट ऑफ अलवर डिसट्रिक, यू.वी.वी.पी. गोरखपुर टवस 35 पृष्ठ 57-62
9. शर्मा एच. एस. एम एल 2017 राजस्थान का भूगोल पंचषील प्रकाषन जयपुर ।
10. डॉ रामा प्रसाद डॉ जगफूल मीना 2013 जनसंख्या भूगोल 'रितु पब्लिकेशन जयपुर ।
11. सैदावत पुष्प 2016 राजस्थान का भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ /
12. मौर्य एस.डी. "2013" जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ 195–374
13. बंसल एस.सी. 2012 "नगरीय भूगोल" मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ पृष्ठ 172
14. चौहान गौतम 2013 "भारत" रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ पृष्ठ 507-530
15. जैन एस.के. "2018" नगरीय भूगोल यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स जयपुर चांदना. आर.सी. 2014 जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली
16. हीरालाल '2014' " जनसंख्या भूगोल " वसुंधरा प्रकाशन गोरखपुर भल्ला एल.आर. "2014" राजस्थान का भूगोल कुलदीप प्रकाशन, अजमेर